Deccan Chronicle 22-April-2021

HISTORIC | STEP **Kaleshwaram water to flow 22km**

Dam water in Nizamsagar

NARENDER PULLOOR | DC
KAMAREDDY, APRIL 21

In a historic step, the Kaleshwaram lift irrigation water will reach the Nizamsagar project in four days' time. Chief Minister K. Chandrasekhar Rao released water from Konda Pochammasagar on April 6 to have it course through and reach the Nizamsagar project in less than three weeks' time.

The water flowing into Haldivagu reached River Manjeera in Medak district on Tuesday. It would reach Nizamsagar project by April 25, officials said.

River Manjeera is a tributary of River Godavari and the confluence is at Kandakurthi in Renjal mandal. The major project across Manjeera is Nizamsagar and its water caters to the irrigation and drinking water needs of Kamareddy and Nizamabad districts. Due to lack of inflows into River Manjeera, the Nizamsagar project is unable to get water regularly.

- **THE WATER** flowing into Haldivagu reached River Manjeera in Medak district on Tuesday. It would reach Nizamsagar project by April 25, officials said.
- **CHIEF MINISTER** K. Chandrasekhar Rao released water from Konda Pochammasagar on April 6 to have it course through and reach the Nizamsagar project in less than three weeks' time.
- **KCR IS** planning to visit Nizamsagar when the water reaches there

Chief Minister Chandrashekar Rao's decision to divert Godavari water from the Kaleshwaram lift irrigation project to Nizamsagar won praise. This would happen soon. Official sources said the Kaleshwaram water will flow for 22km through River Manjeera to reach Nizamsagar.

KCR was planning to visit the Nizamsagar project when the Kaleshwaram water reaches here. Due to Covid-19 infection, his visit may be postponed. At an estimated cost of ₹476 crore, the Nallamadugu lift irrigation project was planned for Jukkal Assembly constituency to irrigate agriculture lands. Jukkal MLA Hanmanth Shinde supervised the arrangements for KCR's programme.

Speaking to *Deccan Chronicle,* Kamareddy district collector Dr A Sharath said the Kaleshwaram water will reach Nizamsagar project within four days. "We are monitoring the water flow from Medak district," he said and added that the Nizamsagar project will regain its previous glory with the arrival of Kaleshwaram water.

Telangana Today 22-April-2021

Kaleshwaram water reaches Nizam Sagar

Project to be filled with six tmc by mid-May

STATE BUREAU
Hyderabad

In a landmark moment, Kaleshwaram water flowed into the Nizam Sagar project in Kamareddy district on Wednesday, 14 days after the water was released from the Kondapochamma Sagar reservoir into Haldi Vagu by Chief Minister K Chandrashekhar Rao.

The Godavari water reached Nizam Sagar backwaters at Golilingala at Nagireddypeta mandal at 5 pm, bringing joy to the farmers in the area.

The Nizam Sagar project, the oldest dam in the State located 144 km from Hyderabad, would be filled with six tmc of water by mid-May that would facilitate officials to meet irrigation needs. The water would also help farmers take up farming operations even in case of a poor monsoon, officials said.

Farmers can now commence their sowing activities on time as there would be sufficient water in the project. The project would receive one tmc every week and .14 tmc daily from Kondapochamma Sagar. At the same time, 32 check dams near the Nizam Sagar project would also be filled with Godavari water, said Kamareddy Chief Engineer T Srinivas. On April 6, the Chief Minister released Godavari water from Kondapochamma Sagar into Haldi Vagu at Avusulapalli in Wargal mandal of Siddipet district.

Godavari water from Kondapochamma Sagar reached Nizam Sagar backwaters via Haldi Vagu at Golilingala on Wednesday.

FARMERS CAN NOW COMMENCE THEIR SOWING ACTIVITIES ON TIME. NIZAM SAGAR PROJECT WILL RECEIVE ONE TMC EVERY WEEK AND .14 TMC DAILY FROM KONDAPOCHAMMA SAGAR
— T SRINIVAS, KAMAREDDY CHIEF ENGINEER

The Chief Engineer said it took 14 days for the Godavari water to reach Nizam Sagar, travelling 90 km from Haldi Vagu. Since the Nizam Sagar project is downstream, the water would help irrigate over 14,000 acres en route.

Actually, plans were chalked out to supply 3,000 cusecs every day to the Nizam Sagar project from the Mallanna Sagar reservoir after digging a separate tunnel. As Mallanna Sagar works are ongoing, to avoid further delay in supplying water to Nizam Sagar ayacut farmers, the Chief Minister decided to convey water from Kondapochamma Sagar through Haldi Vagu.

Officials said since the Nizam Sagar project would be filled with Godavari water, there is more scope for aquaculture as also tourism.

Dainik Jagran 22-April-2021

यमुना में पूजन सामग्री डाल रहे लोग

- यमुना को साफ करने के लिए सरकार कर रही लगातार प्रयास
- नवरात्र पूजा के बाद लोगों ने यमुना में विसर्जित की सामग्री

जागरण संवाददाता, पूर्वी दिल्ली: यमुना को शुद्ध बनाने के लिए सरकार युद्ध स्तर पर प्रयास कर रही है। सरकार की इस मुहिम में कई सामाजिक संस्थाएं भी यमुना को स्वच्छ बनाने में योगदान दे रही हैं, लेकिन कुछ लोग यमुना में पूजन सामग्री डालने से बाज नहीं आ रहे हैं। नवरात्र में एकत्रित पूजन सामग्री को यमुना में विसर्जित करते कई लोगों को देखा गया।

सरकार ने यमुना में कूड़ा-कचरा डालने पर पूरी तरह से पाबंदी लगा रखी है। उसके बाद गीता कालोनी स्थित यमुना घाट पर लोग पूजन सामग्री और अन्य सामान डाल रहे हैं। इस पर न तो जिला प्रशासन की नजर है और न ही पुलिस की। इस घाट पर नवरात्र में जिला प्रशासन की ओर से सिविल डिफेंस के वालंटियर तैनात किए जाते थे। इस बार यहां उनकी मौजूदगी भी नहीं है। यमुना में डाली जा रही सामग्री में कई चीजें ऐसी हैं, जो बायो-डीग्रेडेबल नहीं थीं।

गीता कालोनी के पास यमुना किनारे लगे उपयोग की गई पूजन सामग्री के ढेर • पारस कुमार

स्वदेशी प्राकृतिक संस्था के अध्यक्ष दर्शन वत्स ने बताया कि प्रशासन की ओर से यमुना के अन्य घाटों पर पाबंदी लगी हुई है। यमुना का एक मात्र यही किनारा है जहां प्रशासन की ओर से कोई सुरक्षा व्यवस्था नहीं है। नवरात्र के समय बड़ी तादाद में सामग्री नदी में विसर्जित करने लोग आते हैं। इससे यमुना का पानी गंदा होता है। इस संबंध में जिला प्रशासन के अधिकारियों से बात की गई, लेकिन उनसे फोन पर बात नहीं हो पाई।

Dainik Jagran 22-April-2021

जागरण विशेष

जल संरक्षण

तालाबों के जीर्णोद्धार से निकली रोजगार की धारा

उत्तर प्रदेश के अंबेडकरनगर जिला निवासी विक्रम तिवारी ने सहेजा बारिश का पानी तो संवरने लगी जिंदगानी

अरविंद सिंह ● अंबेडकरनगर

कटेहरी ब्लॉक के प्रह्लादपुर गांव निवासी विक्रम तिवारी की पहल ने तालाबों के जीर्णोद्धार के साथ-साथ जल संचयन व रोजगार की मजबूत इबारत लिख डाली। वह मानसून के दौरान आसपास के गांवों में 52 बीघे में फैले तीन तालाबों में लाखों लीटर पानी बटोर लेते हैं। इसमें मछली पालते हैं, जिससे उनकी बेरोजगारी तो खत्म हुई ही, आज कई लोगों को रोजगार भी दे रहे हैं।

विक्रम बताते हैं, 'बेरोजगारी के दौरान मेरी मुलाकात सुलतानपुर निवासी पोल्ट्री फॉर्म संचालक आलोक सिंह से हुई। उन्होंने मछली पालन की सलाह दी। एक तालाब से शुरुआत की। सफलता मिलने पर आज तीन तालाबों में मछली पालन कर रहा हूं। पहले सरकार ने और अब निजी कंपनियों ने भी मदद शुरू कर दी है। दूध उत्पादन का काम भी शुरू किया है। तालाबों के जीर्णोद्धार का काम तो रोजगार के लिए शुरू किया था, लेकिन गत वर्षों में गिरते जलस्तर के मद्देनजर अन्य तालाबों को संवारने का संकल्प लिया है।'

विक्रम तिवारी

<< अंबेडकरनगर के कटेहरी ब्लॉक में पानी से लबालब तालाब ● जागरण

जागरण की मुहिम

जल संरक्षण दैनिक जागरण के सात सरोकारों में शुमार है। हर साल अभियान के तहत जागरण लोगों को वर्षा जल संरक्षण व संचयन के लिए प्रेरित करता है। इस कड़ी में जल प्रहरियों के प्रयासों को मंच प्रदान किया जाता है, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग उनके कामों से प्रेरणा ले सकें।

आसान नहीं थी राह : विक्रम ने वर्ष 2018 में एक तालाब का जब पट्टा (लीज) कराया, तब धरातल पर इसका वजूद ही नहीं था। प्रशासन की मदद से पैमाइश कराकर तालाब का जीर्णोद्धार कराया। इसके बाद दो अन्य तालाबों का पट्टा कराया। काफी भागदौड़ के बाद इन्हें अतिक्रमण मुक्त कराया। तीनों तालाबों को मछली पालन के लिए तैयार किया। मत्स्य विभाग ने तालाब की खोदाई का 40 फीसद खर्च उठाया व मछली के बच्चे मुहैया कराए। तालाबों के किनारे पौधारोपण भी किया गया है। अब ये तालाब और विक्रम एक-दूसरे को संवार रहे हैं।

लाखों की कमाई, सरकार को भी फायदा: प्रतापपुर चमुर्खा गांव में स्थित करीब 45 बीघे के तालाब में लाखों लीटर जल संचयन के साथ ही मछली पालन से 20 लाख रुपये की वार्षिक आय होती है। 1.13 लाख रुपये सरकार को सालाना राजस्व दिया जाता है। सरखने किशुनीपुर गांव में छह बीघे में फैले तालाब में हजारों लीटर वर्षाजल संचयन के साथ पांच लाख रुपये की वार्षिक आय होती है और सरकार को साल में 7,700 रुपये का राजस्व देते हैं। ऐसे ही प्रह्लाद पट्टी में स्थित एक बीघे के तालाब में जल संचयन के साथ मछली पालन से सवा लाख रुपये की आय होती है। सरकार को 1,600 रुपये राजस्व मिलता है।

प्रवासी मजदूरों को मिला रोजगार : गत वर्ष लॉकडाउन के दौरान तीनों तालाबों के माध्यम से 200 प्रवासी मजदूरों को काम मिला। अब भी रोजाना 15 मजदूर काम करते हैं। सीडीओ घनश्याम मीणा कहते हैं, ऐसे प्रयासों में सरकारी मशीनरी हर कदम पर साथ देने के लिए तैयार है।

स्कैन करें और पढ़ें 'सहेज लो, हर बूंद' अभियान की अन्य सामग्री।

Rajasthan Patrika 22-April-2021

विश्व पृथ्वी दिवस आज

सरकार गंभीर, नई योजना और कानून से काबू पाने को तैयार

उत्तर प्रदेश में कम हो रही जोत लगातार घट रहा भूजल स्तर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

लखनऊ. यूपी सहित पूरी दुनिया में आज विश्व पृथ्वी दिवस मनाया जा रहा है।। आने वाली नस्लों को हम सुंदर और सुरक्षित पृथ्वी सौंपे इसलिए जागरुकता के लिए हम पृथ्वी दिवस मनाते हैं। विकास के नाम पर यूपी में खेती योग्य जोत कम होती जा रही और लगातार भूजल स्तर भी घट रहा। भूजल दोहन में देश में उत्तर प्रदेश टॉप पर है। इस बेलगाम बोरिंग से इको सिस्टम को भारी नुकसान हो रहा है। पर सरकार गंभीरता के साथ कृषि योग्य भूमि बचाने और भूजल दोहन को रोकने के लिए काम कर रही है।

विकास से खेतों को बचाने की नई योजना- यूपी में लगातार विकास हो रहा है। सड़कें बन रहीं हैं। इमारतें बन रहीं हैं। नई आबादियों के लिए नई कालोनियां बसाई जा रही है। इस नए विकास की वजह से खेती योग्य जमीन लगातार कम होती जा रही हैं। वैसे पूरे देश में खेती योग्य कुल 181886,000 हेक्टेयर जमीन है। उत्तर प्रदेश 1.80 करोड़ हेक्टेयर भूमि पर खेती की जाती है। वहीं देश में 26.31 करोड़ किसान हैं। उत्तर प्रदेश में 3.89 करोड़ किसान हैं।

लखनऊ सहित तमाम शहरों में विकास की वजह से खेती योग्य जमीन कम हो रही है। तब सरकार ने अपनी नई योजना के तहत देश में कुल 16,996,000 हेक्टेयर बंजर जमीन को खेती योग्य बनाने का कार्य कर रही है। उत्तर प्रदेश में 80 लाख 61 हजार भूमि बंजर है। और सरकार का मानना है कि वह इसमें लगातार सफल हो रही है।

भूजल दोहन में यूपी नम्बर वन - पृथ्वी के चेहरे को खराब करने में भूजल दोहन एक बड़ा रोल अदा कर रहा है। जहां भारत भूजल दोहन में दुनिया में नम्बर वन है वहीं यूपी देश में 20 फीसद दोहन के साथ टॉप पर है। यहां के 48 जिलों व 20 शहरों के ऊपरी एक्यूफर्स भूजल धारक स्ट्रेटा जवाब दे चुके हैं।

कैच द रेन से रोकेंगे भूजल दोहन- यूपी के भूजल की बदहाल स्थिति में 45 लाख निजी सिंचाई नलकूप, 17 लाख बिना पंपसेट की बोरिंगें, शहरों में घर-घर लगी लाखों समर्सिबल बोरिंग, टयूबवेल और कमर्शियल बोरिंगें भूजल भंडारों के अंधाधुंध दोहन की स्थिति को दर्शाने के लिए काफी है। पर चाहे केंद्र सरकार हो चाहे यूपी सरकार दोनों इस संकट से निपटने के लिए कानून के साथ कैच द रेन अभियान से रोकने को प्रयासरत हैं।

विश्व पृथ्वी दिवस

विश्व पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल को मनाया जाता है। साल 2021 में पृथ्वी दिवस की थीम रिस्टोर द अर्थ है। साल 1970 में इसी दिन पहली बार अर्थ डे मनाया गया था।

कई नादियां नाला बनीं

आंकड़े दर्शाते हैं कि तमाम क्षेत्रों में बीते दो दशकों में भूजल स्तर आठ से 12 मीटर अथवा अधिक नीचे चला गया है। करीब तीन दशक में बारिश में आई जबरदस्त गिरावट ने भूजल की स्थिति को और भयावह बना दिया है। गिरते भूजल स्तर के कारण प्राकृतिक रिसाव घटने से गोमती, सई सहित कई भूजल पोषित नदियों के प्रवाह में में भारी कमी। ये नदियां कम नाले के रुप में परिवर्तित हो गईं हैं।

Rajasthan Patrika 22-April-2021

ट्रैवलॉग अपनी दुनिया

विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप माजुली!

संजय शेफर्ड
ट्रैवल ब्लॉगर, मुश्किल हालात में काम करने वाले दुनिया के श्रेष्ठ दस ब्लॉगर में शामिल

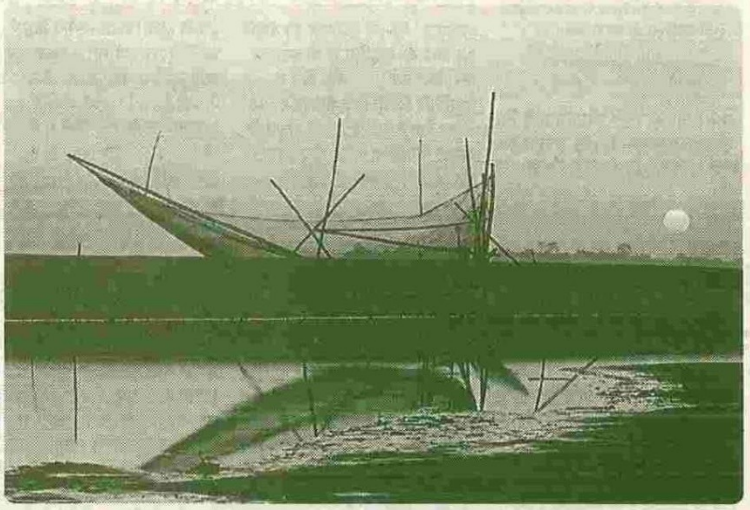

नदी द्वीप माजुली घूमने के साथ यहां के लोगों, यहां के जीवन और यहां की सांस्कृतिक बहुलता को समझने का प्रयास आपको अनोखा अहसास देगा।

ऐसा लगता है कि स्मृति एक यात्रा है। मेरी जब सारी यात्राएं समाप्त हो जाती हैं तो ये स्मृतियां ही हैं जो मुझे गतिशील रखती हैं। इन्हीं के माध्यम से पूर्व में की गई यात्राओं को दोहराता हूं। इस बार मेरी स्मृतियों में जो जगह उभरी है, वह है असम का माजुली द्वीप जिसे विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप कहा जाता है। हालांकि इसे लेकर विवाद भी है।

बनानाल, अमेजन, माराजो दुनिया में कई बड़े द्वीप हैं, किन्तु इनके एक सिरे पर अटलांटिक महासागर है। मौजूदा क्षेत्रफल के आधार पर बांग्लादेश का हटिया नदी द्वीप भी दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप नहीं है। माजुली द्वीप आकार की दृष्टि से कभी 1286 वर्ग किमी. में फैला था जो महज 421.65 किमी. ही रह गया है।

सितम्बर 2016 में गिनीज वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने माजुली को सबसे बड़े नदी द्वीप का दर्जा दिया। जिला घोषित होने के साथ ही माजुली, अब भारत का सबसे पहला नदी द्वीप जिला भी हो गया है। ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित इस द्वीप के बनने के पीछे का तथ्य यह है कि सातवीं शताब्दी की शुरुआत में माजुली जमीन के बड़े टुकड़े का ही हिस्सा था, लेकिन ब्रह्मपुत्र नदी की धारा बदलने और रेत जमा होने से यह धीरे-धीरे द्वीप में तब्दील हो गया। मिट्टी और रेत के लगातार जमाव से यह भूमि उपजाऊ होने लगी और एक बड़े हिस्से को जन बस्ती के लिए उपयुक्त बनाया।

माजुली द्वीप असमिया सभ्यता का मूल स्थान और पांच सदी से असम की सांस्कृतिक राजधानी रहा है। यह द्वीप अपने वैष्णव नृत्यों, रास उत्सव, टेराकोटा और पर्यटन के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। प्राचीन काल की तरह यहां गुरुकुल परंपरा अभी भी जारी है। माजुली को सत्रों की भूमि कहा जाता है जो कि यहां की प्रसाशनिक व्यवस्था को बरकरार रखने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। शुद्ध वातावरण इसे फूलों और वनस्पतियों के अनुकूल बनाता है। खेती और मछली पकड़ना लोगों की आजीविका का प्रमुख जरिया है। मुखौटे बनाना कभी यहां का प्रमुख व्यवसाय था, जो धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है। माजुली के संबंध में कहा जाता है कि यहां जितनी नावें हैं, उतनी इटली के वेनिस में भी नहीं होंगी। मेरी चिंताओं में इस नदी द्वीप का सिकुड़ना, एक विविधतापूर्ण संस्कृति का खत्म हो जाना है। इसके कारण प्राकृतिक हैं। ब्रह्मपुत्र की बाढ़ हर साल माजुली का एक टुकड़ा बहा ले जाती है। कुछ सर्वेक्षण बताते हैं कि यह द्वीप 15-20 सालों में पूरी तरह खत्म हो जाएगा, तो कुछ का दावा एकदम विपरीत है।

फिलहाल माजुली को बचाया जा सके, इसके लिए यूनेस्को की विश्व धरोहरों की सूची में शामिल कराने के प्रयास किए जा रहे हैं। इस जगह पर अगर आप आते हैं तो घूमने के साथ यहां के लोगों, यहां के जीवन और यहां की सांस्कृतिक बहुलता को समझने का प्रयास करें, आपको अच्छा लगेगा। आपको अहसास होगा कि माजुली जैसी खूबसूरत जगह धरती पर और नहीं है।